4. बिहारी

रीतिकालीन काव्य की रीतिसिद्ध काव्यधारा में बिहारी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। इनका जन्म संवत् 1652 विक्रमी में ग्वालियर क्षेत्र के बसुआ गोविंदपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम केशवराय था। अधिकतर विद्वानों का विश्वास है कि यह केशवराय आचार्य केशवदास ही हैं। इनके एक भाई और एक बहिन का भी होना बताया जाता है। इनका बचपन ओरछा के बुंदेलखंड में व्यतीत हुआ था। यहाँ पर इन्होंने काव्यग्रंथों का सम्यक् अध्ययन किया। अतः साक्ष्य के आधार पर कुछ लोग निम्बार्क सम्प्रदाय के बाबा नरहरिदास स्वामी को इनका गुरू मानते हैं। बिहारी ने इन्हीं से संस्कृत, प्राकृत आदि का ज्ञान प्राप्त किया था।

बिहारी माथुर चौबे थे और इनका विवाह मथुरा की किसी रूपसी एवं काव्य प्रतिभा सम्पन्न विदुषी ब्राह्मण-कन्या से हुआ था। संतानहीन होने के कारण इन्होंने अपने भतीजे निरंजन को गोद ले लिया था। अपनी प्रतिभा और व्यवहार से इन्होंने अनेक राजाओं से अपना घनिष्ठ सम्बन्ध बना लिया था। इनका सम्बन्ध शाहजहाँ के दरबार से भी था। शाहजहाँ के निमन्त्रण पर ये आगरा गए और तीन वर्ष तक वहीं रहे। यहाँ र इन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया, जहाँ इनकी वार्षिक वृत्ति बाँध दी गई थी।

बिहारी आमेर के राजा जयसिंह के विशेष कृपापात्र थे। जब ये जयसिंह के दरबार में वृत्ति लेने के लिए गए तो इन्हें पता लगा कि महाराजा जयसिंह अपनी नवविवाहिता रानी के प्रेमपाश में आबद्ध महलों में ही रहते हैं, राजकाल की ओर उनका ध्यान नहीं है। उसी समय बिहारी ने एक दोहा लिखकर महाराजा के पास भेजा–

'नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल।

Scanned with CamScanner

कोटि तक पहुँच कर रह गया है, उसकी उच्च भाव भूमि पर नहीं पहुँच पाया है।

शृंगार की एकरसता को दूर करने के लिए बिहारी ने भक्ति को अवलम्ब बनाया। उसमें भी राधा-कृष्ण को ही आधार रूप में चित्रित किया गया है-

'मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परैं स्यामु हरित दुति होई॥'

नीतित्व बिहारी काव्य की अन्यतम विशेषता है। नीतिपरक सूक्तियों में कवि ने स्वार्थपरता के त्याग तथा उत्कृष्ट मानवीय वृत्तियों के उन्नयन पर बल दिया। इनमें कवि का ज्योतिष, गणित, दर्शन आदि का ज्ञान भी स्पष्ट है तथापि इनमें कवित्व का वह स्तर नहीं मिलता जो शृंगारिक पदो में है।

बिहारी का अभिव्यंजना कौशल एवं कलात्मक स्तर उच्चकोटि का है। ये ब्रजभाषा को तराशते, सँवारते और माँजते प्रतीत होते हैं। इनकी भाषा परिष्कृत ब्रजभाषा है जिसमें बुंदेलखंडी, पूर्वी हिन्दी और फारसी के शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों का मिश्रण है। परम्परागत काव्यशास्त्रीय दृष्टि से बिहारी के काव्य में ध्वनि, अलंकार और रस की सशक्त व्यंजना हुई है। बिम्बविधान की दृष्टि से इनका काव्य अद्वितीय है। बिहारी का वाग्वैदग्ध तो जगप्रसिद्ध है ही। इनमें कल्पना की समाहार शक्ति के साथ-साथ भाषा की समास शक्ति भी विद्यमान है। इसीलिए दोहे जैसे छोटे से छन्द में रस की अविरल धारा बहती दिखाई पड़ती है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि एक ही ग्रन्थ की रचना करके भी कवियों की पंक्ति में बिहारी का उत्कृष्ट स्थान है। उनकी सतसई शृंखला, भक्ति और नीति की त्रिवेणी है जो काव्य की अपूर्व निधि है। इस सम्बन्ध में 'शुक्लजी' का कथन सत्य प्रतीत होता है, 'शृंगार रस के ग्रन्थों में जितनी ख्याति और जितना मान बिहारी सतसई का हुआ है उतना और किसी का नहीं। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है।'

Scanned with CamScanner

अली कली ही सौं बंध्यौ आगैं कौन हवाल॥'

यह दोहा पढ़कर राजा जयसिंह बिहारी के काव्यतत्व से बहुत प्रभावित हुए और बिहारी को अपना राजदरबारी कवि नियुक्त किया। इन्हें एक-एक दोहे पर एक-एक सोने की अशरफी दी जाने लगी। जीवन के अन्तिम क्षणों में बिहारी मथुरा लौट आए। वहीं इनका संवत् 1720 विक्रमी में देहावसान हो गया।

बिहारी ने केवल एक ही ग्रन्थ की रचना की– 'बिहारी सतसई' जो उनकी कीर्ति का आधार है। वे एक ही ग्रन्थ लिखकर काव्य-जगत में अमर हो गए। इसमें 713 दोहे और सोरठे हैं जो मुक्तक शैली में लिखे गए हैं। बिहारी के दोहे अर्थगूढ़ होने के कारण 'गागर में सागर' भरने की कहावत चरितार्थ करते हैं–

'सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर॥'

बिहारी काव्य की प्रधान प्रवृत्ति शृंगारिकता है। उन्होंने केवल दरबारी जीवन के आधार पर ही शृंगारी चित्रों को रीतिकालीन परिवेश के अन्तर्गत नहीं संजोया, ग्रामीण एवं नागरिक जीवन की भी अनेक झाँकियाँ प्रस्तुत कीं। संयोग पक्ष की कोई ऐसी स्थिति नहीं है जो बिहारी की दृष्टि से बची हो। बिहारी ने रूप-वर्णन, नायिका के नख-शिख वर्णन, वय:सन्धि वर्णन, नायक-नायिका भेद तथा मादक युवावस्था की मधुर झलकों सहित हास-परिहास के विशद एवं मनोरम चित्र अकेरे हैं जो मन को मुग्ध कर लेते हैं। बिहारी ने अपनी पैनी दृष्टि से जीवन का निरीक्षण किया था। कवि का लोकानुभव पर्यवेक्षण शक्ति और व्यवहारपटुता इनमें मुखर रही हैं। नपे-तुले शब्दों में किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव का जगमगाता रूप प्रस्तुत करना इनकी विशिष्टता है। अनुभाव विधान में इनकी रस व्यंजना अत्यन्त भव्य बन पड़ी है, ऐसा लगता है कि हमारे सामने हाव-भावों की साकार मूर्ति खड़ी हो :

'बतरस, लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौहंन हँसै, दैन कहैं नटि जाए॥'

भावों की ऐसी सुन्दर योजना कोई दूसरा कवि नहीं कर पाया है। बिहारी का मन वियोग शृंगार में कम रमा है। इनका वियोग-चित्रण रसिकता की

Scanned with CamScanner